रीतिकाल का नामकरण

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* रीतिकाल नाम इस युग की रीतिमुक्त शृंगारी काव्यधारा का भी प्रतिनिधित्व करने में समर्थ है। शुक्ल जी के द्वारा 'रीतिकाल' नामकरण की प्रमुखता इस बात से सिद्ध होती है कि उनके पश्चात् इस काल के लिए अन्य कई नाम निर्धारित किये गये, परन्तु इनमें से कोई भी नाम हिन्दी साहित्य में प्रचलित न हो सका। आज हिन्दी साहित्य के लगभग सभी विद्वान, आलोचक तथा इतिहास-लेखक यह स्वीकार करते हैं कि इस काल का नाम 'रीतिकाल' ही उचित है क्योंकि उसमें तत्कालीन कवियों की काव्य-रचना-पद्धति एवं काव्य-रचना-

दोनों ही बातें आ जाती हैं।

इस प्रकार शुक्ल जी के मत का समर्थन करते हुए हम हिन्दी-साहित्य के संवत् 1700 से संवत् 1900 तक की काला-वधि को रीतिकाल कहना ही उपयुक्त समझते हैं।

इतिहास को सही ढंग से समझने के लिए काल-विभाजन और उसका नामकरण आवश्यक है। साहित्येतिहास भी इसका अपवाद नहीं है। कालविभाजन और नामकरण करने से इतिहास में एक प्रकार की व्यवस्था आ जाती है। वस्तुतः काल-विभाजन से साहित्य के विकास की दिशा, विकास को प्रभावित करनेवाले तत्वों, विविमन्न परिवर्तनों और बदलावों का पता चलता है। इसके माध्यम से हम साहित्य-विशेष की बदली प्रवृत्तियों को समझ पाते हैं और उनका सही-सही मूल्यांकन कर पाते हैं।

समय बदलने के साथ-साथ युग की परिस्थितियाँ और प्रवृत्तियाँ बदलती रहती हैं। इतिहास का अध्ययन करने के लिए प्रत्येक युग की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों पर भी विचार किया जाता है। सभी युगों की प्रवृत्तियाँ एक जैसी नहीं होती हैं, इसीलिए इतिहास को उसकी परिस्थितियों के बदलाव के अनुसार अलग-अलग कालों में बाँटा जाता है। तत्पश्चात उन कालों या युगों की पहचान के लिए कोई-न-कोई नाम दिया जाता है। यही कारण है कि इतिहास के अध्ययन के लिए काल-विभाजन और नामकरण की आवश्यकता पड़ती है।